परमेश्वर के सामने उपस्थित हो — और वह तुमसे बातचीत शुरू
करेगा

मैं तुम्हें हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम में नमस्कार करता हूँ। उसी को सदा सर्वदा महिमा और आदर मिलता रहे। आमीन।

तुम्हें एक बहुत महत्वपूर्ण बात समझनी चाहिए: शैतान, जो हमारा विरोधी है, हर समय अपने काम केवल अपनी शक्ति से पूरा नहीं करता। वह भली-भांति जानता है कि कुछ बातें तब तक नहीं हो सकतीं जब तक वे उन आत्मिक सिद्धांतों के अनुसार न हों जिन्हें स्वयं परमेश्वर ने स्थापित किया है।

यद्यपि वह दुष्ट है, फिर भी वह परमेश्वर द्वारा ठहराए गए नियमों के भीतर ही कार्य करता है। दुख की बात यह है कि वह इन सिद्धांतों का उपयोग विनाश के लिए करता है, जबकि हम, जो परमेश्वर के राज्य के पुत्र हैं, अक्सर इन्हें नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

अय्यूब का उदाहरण

अय्यूब के जीवन पर विचार करो। जो पीड़ा शैतान उस पर लाना चाहता था, वह सामान्य तरीकों से संभव नहीं थी। इसलिए उसने एक ऊँचा मार्ग अपनाया—वह परमेश्वर के सामने उपस्थित हुआ।

परमेश्वर के सामने उपस्थित हो — और वह तुमसे बातचीत शुरू
करेगा

उसने अपने घमंड को त्याग दिया और पवित्र स्वर्गदूतों के साथ जाकर परमेश्वर की उपस्थिति में खड़ा हुआ। वह जानता था कि परमेश्वर सारी सृष्टि का स्वामी है, और वह अवश्य उस पर ध्यान देगा।

और वास्तव में, परमेश्वर ने उससे बातचीत शुरू की।

अय्यूब 1:6-8
“एक दिन परमेश्वर के पुत्र यहोवा के सामने उपस्थित होने को आए, और शैतान भी उनके बीच में आया।
यहोवा ने शैतान से पूछा, ‘तू कहाँ से आया?’
शैतान ने उत्तर दिया, ‘मैं पृथ्वी पर इधर-उधर घूमता और फिरता रहा हूँ।’
तब यहोवा ने शैतान से कहा, ‘क्या तूने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है…?’”

इस बातचीत के द्वारा शैतान को अवसर मिला कि वह अपनी शिकायतें प्रस्तुत करे, और अंत में उसे सीमाओं के भीतर कार्य करने की अनुमति दी गई।

परमेश्वर के सामने उपस्थित हो — और वह तुमसे बातचीत शुरू
करेगा

एक आत्मिक सिद्धांत जिसे बहुत से विश्वासी अनदेखा करते हैं

यदि इस संसार का “ईश्वर” (शैतान) समझता है कि उसकी सफलता केवल उसकी शक्ति पर निर्भर नहीं है, बल्कि परमेश्वर के सामने उपस्थित होने पर भी निर्भर है—तो हम और तुम क्यों नहीं?

2 कुरिन्थियों 4:4
“इस संसार के ईश्वर ने अविश्वासियों के मन को अंधा कर दिया है…”

यह आश्चर्य की बात है कि शैतान परमेश्वर की उपस्थिति का मूल्य जानता है, जबकि बहुत से विश्वासी उससे दूर भागते हैं।

हम कहते हैं: “हम थक गए हैं।”
हम कहते हैं: “हम व्यस्त हैं।”
हम कहते हैं: “हमें काम के लिए आराम करना है।”

लेकिन यदि तुम अपने जीवन को अपनी ही शक्ति से चलाना चाहते हो, तो परिणाम भी वैसा ही होगा—तुम आत्मिक रूप से कमजोर और पराजित रहोगे।

परमेश्वर के सामने उपस्थित हो — और वह तुमसे बातचीत शुरू
करेगा

यिर्मयाह 17:5
“शापित है वह मनुष्य जो मनुष्य पर भरोसा रखता है और अपने बल
को शरीर बनाता है…”

शैतान इस मार्ग को पहले ही आज़मा चुका है—स्वयं पर निर्भर रहना—और उसने उसकी सीमा देख ली है। इसलिए वह अब भी परमेश्वर के सामने उपस्थित होता है।

परमेश्वर के सामने उपस्थित होने की शक्ति

यहाँ एक गहरी आत्मिक सच्चाई है:
परमेश्वर उन लोगों से बातचीत शुरू करता है जो लगातार उसकी उपस्थिति में आते हैं।

यदि हम प्रार्थना, संगति, उपवास और परमेश्वर का मुख खोजने को अनदेखा करते हैं, तो हमें यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि परमेश्वर हमें मार्गदर्शन देगा।

याकूब 4:8

परमेश्वर के सामने उपस्थित हो — और वह तुमसे बातचीत शुरू
करेगा

“परमेश्वर के पास आओ, तो वह तुम्हारे पास आएगा।”

यिर्मयाह 29:13
“तुम मुझे खोजोगे और पाओगे, जब तुम पूरे मन से मुझे खोजोगे।”

यदि हम नियमित रूप से परमेश्वर को नहीं खोजते, तो जीवन में बहुत सी बातें अधूरी रह जाएँगी—इसलिए नहीं कि परमेश्वर नहीं चाहता, बल्कि इसलिए कि हम उसकी उपस्थिति में नहीं आते।

जब तुम परमेश्वर की उपस्थिति में रहते हो तब क्या होता है?

जब तुम परमेश्वर की उपस्थिति में समय बिताते हो:

परमेश्वर तुम्हारी आत्मा से बात करना शुरू करता है

वह तुम्हारी आवश्यकताओं को पहले ही प्रकट करता है

परमेश्वर के सामने उपस्थित हो — और वह तुमसे बातचीत शुरू
करेगा

वह तुम्हारी इच्छाओं को अपनी इच्छा के अनुसार ढालता है

वह तुम्हें ऐसे उत्तर देता है जिनकी तुमने कल्पना भी नहीं की होती

यूहन्ना 10:27
“मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता
हूँ…”

भजन संहिता 27:8
“तूने कहा, ‘मेरा मुख ढूंढो।’ तब मेरे मन ने कहा, ‘हे यहोवा,
मैं तेरा मुख ढूंढूंगा।’”

यह समझो: परमेश्वर अक्सर सुनाई देने वाली आवाज़ में नहीं, बल्कि तुम्हारी आत्मा, तुम्हारे भीतर की प्रेरणा, और तुम्हारे जीवन की परिस्थितियों के द्वारा बोलता है।

परमेश्वर के सामने उपस्थित हो — और वह तुमसे बातचीत शुरू करेगा

कार्य करने का आह्वान

यदि तुम एक विश्वासी हो, तो आज से शुरू करो:

परमेश्वर को अपना समय दो

प्रार्थना में स्थिर रहो

संगति और आराधना में भाग लो

उपवास का अभ्यास करो

प्रतिदिन परमेश्वर के वचन का अध्ययन करो

परमेश्वर के सामने उपस्थित हो जाओ।

वहीं परिवर्तन होता है।

परमेश्वर के सामने उपस्थित हो — और वह तुमसे बातचीत शुरू करेगा

वहीं दिशा मिलती है।
वहीं परमेश्वर तुम्हारे जीवन से बात करना शुरू करता है।

अंतिम चेतावनी और निमंत्रण

यदि तुम अभी भी मसीह के बाहर हो, तो याद रखो:
हमारे पास इस पृथ्वी पर अनंत समय नहीं है।

अंत समय के चिन्ह पूरे हो रहे हैं। अनुग्रह का द्वार सदा के लिए खुला नहीं रहेगा।

2 कुरिन्थियों 6:2
“देखो, अब ही स्वीकार का समय है; देखो, अब ही उद्धार का दिन
है।”

इब्रानियों 3:15
“आज यदि तुम उसकी आवाज़ सुनो, तो अपने मन को कठोर न करो…”

आज ही पश्चाताप करो। सच्चे मन से मसीह की ओर लौटो। सुसमाचार को

परमेश्वर के सामने उपस्थित हो — और वह तुमसे बातचीत शुरू करेगा

टालना नहीं चाहिए—यह अनन्त जीवन का विषय है।

एक दिन ऐसा आ सकता है जब बहुत देर हो जाएगी।

मरानाथा — प्रभु आ रहा है।

परमेश्वर तुम्हें आशीष दे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp